

पाठ—14 खानपान की बदलती तस्वीर
लेखक प्रयाग शुक्ल

खानपान की संस्कृति से परिचित
कराने के लिए लेखक ने प्रस्तुत पाठ में
दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत की
खानपान व्यवस्था को प्रस्तुत किया है।

दक्षिण भारत की सांभर—रसम, उत्तर भारत की ढाबा संस्कृति और अब तो चाइनीज़ और अन्य विदेशी भोजन भी भारतीय संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है ।

लेखक ने पाठांश के माध्यम से राज्य स्तर के खाद्य पदार्थों की भी जानकारी दी है। जैसे गुजराती ढोकला तो अंग्रेजी राज की ब्रेड और दिल्ली के छोले-कुलचे।

खानपान की इस नई संस्कृति में हमें
राष्ट्रीय एकता के नए बीज भी मिल
रहे हैं ।

स्थानीय व्यंजनों की कमी और मिश्रित
व्यंजनों की संस्कृति से वास्तविक
स्वाद लगभग समाप्त हो रहा है ।

खानपान की मिश्रित या विविध संस्कृति से हमें कई चीजें चुनने का मौका दिया है। अतः हमें भी इसके लिए यह निर्णय लेना होगा कि कौन-से व्यंजनों को हमें अपनी प्लेट में जगह देनी है जिनसे हमारा स्वाद और स्वास्थ्य दोनों ही बने रहें।